।। अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

भूरामल श्यामसुखा 'संघ सेवा पुरस्कार' से सम्मानित
जीवन को सफल ही नहीं, सार्थक बनाएं – आचार्य महाप्रज्ञ
–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 11 मार्च : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित एक विशिष्ट समारोह में जैन विश्व भारती द्वारा नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट कोलकत्ता के सौजन्य से पानादेवी सेखानी की स्मृति में प्रतिवर्ष दिया जाने वाला संघ सेवा पुरस्कार इस वर्ष श्रीडूँगरगढ़ निवासी इन्दौर प्रवासी भूरामल श्यामसुखा को प्रदान किया गया। उन्हे यह पुरस्कार अपने द्वारा की गई धर्मसंघ की उल्लखनीय सेवाओं के लिये दिया गया। इस पुरस्कार स्वरुप जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष रणजीतसिंह बैद, बुधसिंह सेठिया, सेखाणी ट्रस्ट के प्रधान ट्रस्टी जेसराज सेखानी, लक्ष्मीपत सेखानी ने प्रतीक चिन्ह, अभिनन्दन पत्र और एक लाख पच्चीस हजार की राशि का चैक भेंट किया।

इस समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि श्रीडूँगरगढ़ कार्यकर्ताओं की भूमि है। इस मिट्टी में कुछ ऐसा है कि यहां कार्यकर्ता पैदा होते है। इस क्षेत्र से मुनि भी बहुत हुए हैं। गंगाशहर, श्रीडूँगरगढ़ और सरदारशहर तेरापंथ की उपजाऊ भूमि रही है। इन वर्षो में इस दृष्टि से कुछ कमी आई है। इस ओर ध्यान देना है। आज तेरापंथ का बहुत विस्तार हो गया है। अनेक क्षेत्रों से साधु–साध्वियों के लिए मांग आती है। पर जब इतनी संख्या हमारे पास नहीं होगी तो सब जगह आपूर्ति कैसे की जा सकेगी। प्रत्येक परिवार ऐसा संकल्प ले कि एक सदस्य को धर्मसंघ की सेवा में नियोजित करेंगे। उन्होंने कहा कि सफल बहुत सारे हो जाते हैं, पर सब सार्थक नहीं होते। सफल से भी आगे की भूमिका है सार्थक होना। जीवन को केवल सफल ही नहीं सार्थक भी बनाने का प्रयास होना चाहिए। उन्होने भूरामल श्यामसुखा की निष्ठा और धर्मसंघ के लिए की गई सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि भूरामल का नाम जीवन को सार्थक करने वालों की कोटी में आने लग गया है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि कार्यकर्ता की उत्तम, मध्यम और निम्न ये तीन श्रेणियां है। जो काम करता है और नाम, ख्याती से दूर रहता है वह उत्तम श्रेणी का कार्यकर्ता होता है। जो काम के साथ नाम की भावना रखता है वह मध्यम श्रेणी का कार्यकर्ता होता है और जो काम कम करता है पर नाम की भावना ज्यादा रखता है वह निम्न श्रेणी का कार्यकर्ता होता है। भूरामलजी उत्तम श्रेणी के कार्यकर्ता है। उन्होंने कहा कि काम के साथ संघभक्ति और संघपति के प्रति समर्पण होना चाहिए। इन दृष्टियों से श्यासुखा जी उपयुक्त है।

कार्यक्रम में मुनि धनंजय कुमार ने श्यासुखा को धरती से जुड़ा कार्यकर्ता बताया। जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष रणजीतसिंह बैद ने स्वागत भाषण दिया। तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक लालचंद सिंघी ने अपने विचार रखे। जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष बुधसिंह सेठिया ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। भूरामल श्यासुखा ने पुरस्कार स्वीकृति भाषण देते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा मेरा मिशन बन जाये ऐसा आशीर्वाद दें। श्री श्यामसुखा के बड़े भाई गुलाबचंद श्यामसुखा ने पुरस्कार स्वरुप मिली राशी में एक लाख पच्चीस हजार और जोड़ कर जैन विश्व भारती को भेंट करने की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बच्छराज दुगड़ ने किया।

क्रमश : 2

एस. रघुनाथन 14 को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित होंगे

दिल्ली सरकार के पूर्व मुख्य सचिव एस. रघुनाथन 14 मार्च को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित होने वाले समारोह में जय तुलसी फाऊंडेंशन द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने वाले अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित होंगे। उनको यह पुरस्कार अणुव्रत, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के द्वारा मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रदान किया जायेगा। पूर्व में यह पुरस्कार पूर्व राष्ट्रपति डॉ.शंकर दयाल शर्मा, पूर्व उपराष्ट्रपति भैरुसिंह शेखावत, पूर्व गृहमंत्री शिवराज पाटिल, वैज्ञानिक डॉ. आत्माराम, साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार एवं यशपाल जैन, स्वतंत्रता सैनानी देवेन्द्र कुमार कर्णावट, समाज सेवी शिवाजी भावे, शिक्षाविद् ग्लेन डी. पेज एवं महावीरराज गेलड़ा सहित अनेक राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, समाजसेवियों, शिक्षाविदों को प्रदान किया जा चुका है। 14 मार्च को प्रात : 9.30 बजे मालू भवन में आयोजित होने वाले समारोह में एस. रघुनाथन को इस पुरस्कार के तौर पर एक लाख इक्कावन हजार रुपये मूल्य की अर्थराशि का चैक, शॉल सम्मान, प्रशस्ति–पत्र, एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान किया जायेगा।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक